डॉ० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

न्याय दर्शन की विवेचना करें ?

Ans : न्याय-दर्शन के प्रणेता के रूप में महर्षि गौतम का नाम लिया जाता है। इन्हें गौतम एवं अक्षपाद के नाम से भी जाना जाता है। यही कारण है कि न्याय-दर्शन को अक्षपाद दर्शन भी कहा गया है। न्याय दर्शन में सोलह पदार्थों की व्याख्या हुई वे हैं :-

(1) प्रमाण (2) प्रमेय (3) संशय (4) प्रयोजन (5) दृष्टांत (6) सिद्धांत (7) अवयव (8) तर्क (9) निर्णय (10) वाद (11) जल्प (12) वितण्डा (13) हेत्वाभास (14) छल (15) जाति (16) निग्रहस्थान

न्याय दर्शन अपने ज्ञानमीमांसीय सिद्धांत में चार प्रमाणों की स्वीकृति दी है वे हैं- (1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) शब्द तथा (4) उपमान। न्याय दर्शन में सत्य ज्ञान को 'प्रमा' तथा असत्य या मिथ्या ज्ञान को 'अप्रमा' कहा गया है तथा 'प्रमाण' यथार्थ ज्ञान के साधन को माना गया है। न्याय ने ज्ञान के विषय को प्रमेय तथा ज्ञान प्राप्त करनेवाले को 'प्रमाता' कहा है। न्याय के अनुसार प्रत्यक्ष ज्ञान संदेहरहित तथा स्वयं निर्विवाद है। "प्रत्यक्षं किं प्रमाणम्" न्याय-दर्शन के अनुसार प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए तीन बातों का होना अत्यन्त आवश्यक माना गया है। "इन्द्रियार्थ-सन्निकर्ष जन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्"

न्याय-दर्शन के अनुसार प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए तीन बातों का होना अत्यन्त आवश्यक माना गया है (1) इन्द्रिय (2) विषय (3) सन्निकर्ष।

ज्ञानेन्द्रियाँ भी दो प्रकार की मानी गई हैं बाह्य तथा आंतरिक।